CHAPTER 15

संवदिया

PAGE 111, प्रश्न और अभ्यास

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :1

संवदिया कि क्या विशेषताएँ हैं और गाँववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा हैं?

उत्तर- संवदिया फणीश्वर नाथ की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। सवांदिया की विशेषताएं थी की वह सन्देश को जिस तरह से बताया गया है वैसे ही जाकर बता देता था। जैसे अगर कसी ने कोई बात रोकर कही है तो रोकर बताता था। अगर किसी ने बात हँस कर कही है तो हँस कर बताता था। गावं वालों के मन में सवंदिया के लिए अवधारणा

थी की उसका काम बस संदेशा एक गावं से दूसरे गावं पहुँचाना है। ये काम कोई भी कर सकता है।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :2

बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में किस प्रकार की आशंका हुई?

उत्तर- बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में आशंका हुयी की अवश्य ही कोई गुप्त सन्देश ले जाना है जिसकी जानकारी किसी को नहीं होनी चाहिए।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :3

बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश क्यों भेजना चाहती थी?

उत्तर- बड़ी बहुरिया अपने मायके अपनी परिस्थिति का सन्देश भेजना चाहती थी। वह चाहती कि उसके मायके वाले उसका सन्देश सुनकर उसे यहां से ले जाए।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :4

हरगोबिन बड़ी हवेली में पहुँचकर अतीत की किन स्मृतियों में खो जाता है?

उत्तर- हरगोबिन हवेली पहुँच कर आमरण करता है की पहले के समंय में हवेली की ठाठ बाट और शान अलग थी। घर में नौकरिनिया तथा बड़े भैया के पास चमचे रहते थे। बड़ी बहुरिया मेहँदी लगे हाथो से कई नाइन परिवारों की जिम्मेदारी उठती थी।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :5

संवाद कहते वक्त बड़ी बहुरिया की आँखें क्यों छलछला आईं?

उत्तर- संवाद कहते वक़्त बड़ी बहुरिया की आँखे इस लिए छलछला गयी क्योंकि उन्होंने अपनी दयनीय स्थिति को सबसे छुपाया था हरगोबिन को सारी दशा बता रही है।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :6

गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन में काँटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था? उससे छुटकारा पाने के लिए उसने क्या उपाय सोचा?

उत्तर- गाडी पर सवार होने के बाद बड़ी बहुरिया की बातें उसके मन में कांटे की तरह चुभ रही थी।

उसने आजतक ऐसा सन्देश नहीं पहुँचाया था। इस सन्देश में एक बेटी अपनी माँ से सहायता मांग रही है। बड़ी बहुतिया के मार्मिक सन्देश उसके मन में कांटे की तरह चुभ रहे है।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :7

बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका?

उत्तर- हरगोबिन बड़ी बहुरिया का सवांद इस लिए नहीं सुना सका क्योंकि उसने सोचा की बड़ी बहुरियाँ इतने कष्ट में थी और गावं के किसी व्यक्ति ने मदद नहीं की। अगर दूसरे गावं से मदद मांगेंगे तो ये शर्म की बात होगी। अतः वह बड़ी बहुरिया का सवांद सुना नहीं सका।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :8

'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है' से क्या आशय है?

उत्तर- इस पंक्ति का आशय यह है की सवंदिया जहां संदेशा लेकर जाता है वहां उसकी बहोत आवभगत होती है। उसके लिए तरह तरह के पकवान बनाये जाते है जिन्हे खाकर वह खूब सोता है। अपनी आवभगत कराना उसका अधिकार है।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :9

जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया?

उत्तर- जलालगढ़ पहुंचने के बाद हरगोबिन ने बड़ी बहुरया के सामने संकल्प लिया की वह अब आलस

नहीं करेगा। बेरोजगार नहीं बैठेगा। बड़ी बहुरिया की देखभाल एक माँ की तरह करेगा।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास :10

डिजिटल इंडिया के दौर में संवदिया की क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर- डिजिटल इंडिया के दुआर में स्वांगिया की भूमिका शून्य है। क्योंकि आज के दौर में हर देश १ मिनट के अंदर पहुँच जाता है संचार क्रांति में इतना विकास हुआ है। कोई भी व्यक्ति इस भागे दौड़ते समय में स्वांदिया का कार्य नहीं कर सकता है।

भाषा - शिल्प

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :1

इन शब्दों का अर्थ समझिए-

काबुली-कायदा

..

रोम-रोम कलपने लगा

..

अगहनी धान

..

उत्तर-

<u>काबुली-कायदा</u> :- इसका मतलब है कि काबुल से आए व्यक्ति द्वारा बनाए गए नियम कानून।

<u>रोम-रोम कलपने लगा</u> - इसका मतलब है कि रोम-रोम दुःख से परेशान हो गया।

Zoopykitab Game textbooks, klick away

<u>अगहनी धान</u> - अगहन के महीने में होने वाले धान को अगहनी धान कहा जाता है। इसे दिसंबर के आसपास समय माना जाता है।

PAGE 112

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :2

पाठ से प्रश्नवाचक वाक्यों को छाँटिए और संदर्भ के साथ उन पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-

<u>फिर उसकी बुलाहट क्यूँ हुई</u> ? : बड़ी हवेली से संवाद ले जाने का बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में ये सवाल आया। क्योंकि अब कोई भी सवंदिया से सेदेशा नहीं भेजता था।

<u>कहाँ गए वे दिन</u> ? : यह वाक्य प्रश्नवाचक है । हरगोबिन हवेली के पुराने समय जब हवेली में रौनक हुआ करती थी और नौकरानियों का डेरा हुआ करता था को याद करने पर उसके मन में यह प्रश्न उठता है।

<u>किसके भरोसे यहाँ रही हूँ</u> ? : यह प्रश्न बड़ी बहुरिया स्वंम से करती है। वह जानती है की उसके पति की मृत्यु के बाद यह उसका कुछ भी नहीं रह गया है।

12:1:15:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :3

इन पंक्तियों की व्याख्या कीजिए-

(क) बड़ी हवेली अब नाममात्र की ही बड़ी हवेली है।

(ख) हरगोबिन ने देखी अपनी आँखों से द्रौपदी की चीरहरण लीला।

(ग) बथुआ साग खाकर कब तक जीऊँ?

(घ) किस मुँह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा।

उत्तर-

(क)प्रस्तुत पंक्ति में फनीश्वरनाथ जी का कहना है कि : अब बड़ी हवेली बस नाम की हवेली रह गयी है। क्योंकि अब हवेली में पहले जैसी रौनक और नौकरों की भीड़ नहीं रही।

(ख) इस पंक्ति में हरगोबिन उस समय का वर्णन करता है जब बड़ी बहुरानी के गहने उनके देवरों ने बायंट लिए थे। यहाँ तक की उनकी सारी के भी तीन टुकड़े करके इस लिए हरगोबिन उनकी तुलना द्रौपदी के चीरहरण से करता है।

(ग) अपनी गरीबी को दर्शाने के लिए बड़ी बहुरिया कहती है की बथुआ का साग क्यूंकि बथुआ का साग खाली स्थानों पर ऐसे ही उग जाता है। वह वही कहकर जिन्दा है। अपनी माँ को अपने बुरे

हाल दर्शाने के लिए वह यह कहती है कि बथुआ ससाग खाकर कब तक जीउँ?

(घ) बड़ी बहुरिया का सवांद बहोत ही मार्मिक था। हरगोबिन सोचता है की वह किस तरह सवांद बड़ी बहुरिया की माँ को सुनयेगा। वो क्या सोचेंगी बेटी को रानी बनाकर भेजा वही उसे भिखारी सा जीवन जीएएन पद रहा है उसके मन में कितना कष्ट होगा।

Copykitab
Same textbooks, klick away